R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 26वें वर्ष में प्रवेश

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

छाया सक्सेना 'प्रभु' विशेषांक

वर्ष 26 | अंक 10 | रविवार, इलाहाबाद, 26 जुलाई 2026 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

❖ संपादकीय

इस बार छाया सक्सेना 'प्रभु'

उमेश श्रीवास्तव
संपादक

जीवन में अध्यात्म का,
होता बड़ा महत्व।
जीवन का यह सार है ,
इसका बड़ा है तत्व।
तत्व का तुम सब करो,
चिंतन-मनन विचार।
इसी में सब कुछ निहित है,
जग का यह आधार।

तो बात हो रही है जबलपुर की छाया सक्सेना 'प्रभु' की। प्रभु के चरणों में आस्थावान कवयित्री छाया सक्सेना 'प्रभु' के जीवन में मां शारदे का बहुत बड़ा महत्व है। नर्मदा तट पर बसी कवयित्री छाया सक्सेना का अनुभव लाजवाब है। तमाम अनुभव से लबरेज कवयित्री छाया सक्सेना प्रभु का आत्मविश्वास बहुत दृढ़ है। अपने आराध्य के प्रति आस्था रखने वाली कवयित्री छाया सक्सेना प्रभु की पठन-पाठन और किताबों से अपार स्नेह है। पढ़ना-लिखना और रचनाकर्म में तल्लीन रहना जैसे इनका स्वभाव है। रचना में क्या-क्या लिखती हैं, कहती हैं देखिए -

पहले बानगी

उम्मीद के अंकुर नव आशा बोती ।
अभिलाषा मन की परिभाषा होती ।।

दूसरी बानगी

मन में सेवा भाव भरा हो
तब जग सुंदर बनता है ।
भेद भाव की बातें न हो
तब जग सुंदर लगता है ।।

तीसरी बानगी

मन गंगाजल, यमुना धारा
संगम गीत सुनाएँ ।
अंतर्मन को दीप्त करें तो
हम प्रयाग बन जाएँ ।।

इन्हीं सब प्रतिभा के चलते कवयित्री छाया सक्सेना 'प्रभु' को जून माह का सावित्री देवी स्मृति साहित्य सम्मान देते हुए संस्था प्रसन्न है। संस्था आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है। अंक कैसा लगा, प्रतिक्रिया जरुर दीजिएगा।

अंत में -

लिखते लिखते जगमुआ,
विद्वान भया न कोय।
जो अध्यात्म का ककहरा पढ़े,
वही विद्वान होय ।

उमेश श्रीवास्तव

❖ जीवन संघर्ष

आत्म संघर्ष

छाया सक्सेना 'प्रभु'
कवयित्री

आत्मसघर्ष

मेरे जीवन में संघर्ष का स्वरूप बाहरी परिस्थितियों से अधिक आत्मविकास और निरंतर सीखने की साधना रहा है। बचपन से ही साहित्यिक वातावरण एवं अध्ययनशील परिवेश प्राप्त हुआ, जिससे पुस्तकों, लेखन और चिंतन के प्रति स्वाभाविक रुचि विकसित हुई। विद्यालयीन जीवन में शिक्षकों का स्नेह और मार्गदर्शन मिला, जिसने साहित्य के प्रति अनुराग को और दृढ़ किया। पढ़ने की आदत धीरे-धीरे लेखन की अभिव्यक्ति में परिवर्तित होती गई और सीखने की यह यात्रा आज भी निरंतर जारी है।

प्रकृति मेरे चिंतन और सृजन का प्रमुख आधार रही है। पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं तथा पर्यावरण से जुड़े विषय सदैव मुझे आकर्षित करते रहे हैं। उद्यान विकास, हरित नवाचार तथा प्रकृति के छोटे-छोटे संदेशों को जीवन से जोड़कर देखने का प्रयास मेरे व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण पक्ष है। मेरा विश्वास है कि हमारे आसपास की प्रकृति ही सकारात्मक सोच, संवेदनशीलता और जीवन-मूल्यों की सबसे बड़ी प्रेरक है।

लेखन के माध्यम से मैं प्रकृति-प्रेम, सकारात्मक चिंतन, प्रेरणा और मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का प्रयास करती हूँ। स्वयं को आज भी एक विद्यार्थी मानते हुए अवलोकन, अध्ययन और अनुभवों से सीखना मेरी सतत साधना है। यही सीखने, सृजन करने और समाज में सकारात्मकता के छोटे-छोटे बीज बोने की यात्रा मेरे जीवन का वास्तविक आत्मसंघर्ष और आत्मसंतोष है।

❖ कवितायें

छाया सक्सेना 'प्रभु'
कवयित्री

मैया नर्मदे के घाट

अमृत रसमय जल मिले, पीकर होवें तृप्त ।
छाया मिलती मातु की, पूजन से संतृप्त ।।

जीवनदायनि नर्मदे, जीवन रेखा आप ।
दर्शन से कटते रहे, सकल सर्वदा पाप ।।

अमरकण्ट उद्गम हुआ, माई बगिया पास ।
तीन सरोवर से सजी, भरती सदा उजास ।।

पश्चिमवाहिन चल पड़ीं, पहला कपिल प्रपात ।
धारा बहती दुग्ध की, मॉ का सहज प्रताप ।।

डिंडोरी से मंडला, बरगी भेड़ाघाट ।
फिर आया बरमान भी, साथ हंडिया पाट।।

मंधाता ओंकार सह, माहेश्वर के रंग ।
बड़वानी खरगौन से, विमलेश्वर के संग ।।

शूलपाणि की झाड़ियाँ, भृङ्गी जैसे भक्त ।
कहें नर्मदे हर सदा, होगें तभी विरक्त ।।

सागर संगम जा हुआ , खाड़ी थी खंभात ।
मीठी तलई में मिलीं, मक्रवाहिनी मात ।।

राम नाम महिमा अमर

राम नाम हिय धारकर, सागर कीन्हा पार ।
खोज लिया सिय मातु को, महिमा राम अपार ।।

राम राम जपते रहो, होगे भव से पार ।
राम नाम लिख तैरते, पत्थर भी जल धार ।।

राम सेतु को बाँधते, अनुज नील नल वीर ।
वानर सेना साथ में, कर्म करें रख धीर ।।

रामेश्वर शिवलिंग बना, पूजन करते राम ।
प्रगट हुए शंकर तभी, काज सकल अविराम ।।

धर्म सत्य विजयी सतत, रावण का कुल नाश ।
हुआ विभीषण का तिलक, फैला दिव्य प्रकाश ।।

राम सिया हनुमत लखन, चले अयोध्या धाम ।
मनी दिवाली है यहाँ, जहाँ के राजा राम ।।

राज तिलक विधिवत किया,गुरु वशिष्ठ आशीष।
रामभक्त केवट सहित, आए राज कपीश ।।

राम राज्य महिमा अमर, व्याप्त सकल सुख शांति ।
सरयू तट पावन अमर, दूर जगत मन भ्रांति ।।

अपने सामने

वक्त बदलता रीति बदलती

छाया सक्सेना 'प्रभु' विशेषांक

हिंदी साप्ताहिक शहर समता

❖ कवितायें

छाया सक्सेना 'प्रभु'
कवयित्री

बदला ये संसार है ।
अगर कहीं कुछ नहीं बदलता
नेह भरा परिवार है ।।

अपने सामने बढ़ते देखा
जड़ पर वृक्ष खड़ा है ।
शाख तना पत्तों को थामे
हर फल बीज पड़ा है ।।

हर मुख को मुस्काते पाया
उम्मीदों का साथ है ।
मेल जोल सँग प्रीत बढ़ाते
हाथों में सब हाथ है ।।

चारों ओर हरियाली फैली
स्वर्णिम लागे भोर है ।
बागों में कोयल कूके जब
नाँच उठे मन मोर है ।।

अपने सामने दृश्य सुहाने
प्रकृति निराली आली है ।
पर्यावरण बचा लो भैया
वरना जीवन खाली है ।।

अभिलाषा

उम्मीद के अंकुर नव आशा बोती ।
अभिलाषा मन की परिभाषा होती ।।

जब कली खिलेगी बागों में प्यारी ।
तब दुखी न होगी कोई भी नारी ।।
मुश्किल कितनी भी आएँ और जाएँ
पर कदम बढ़े जो रुकने न पाएँ ।।
कब मौन अधर की मृदु भाषा मोती ।
अभिलाषा मन की परिभाषा होती ।।

हर शिखर सफलता चढ़ती ही जाती ।
हर गीत खुशी के अपनों संग गाती ।।
नारी सृष्टि की अनुपम सी गाथा ।
हिंदी की बिंदी से शोभित माथा ।।
मूल्यों की माला वो सदा पिरोती ।
अभिलाषा मन की परिभाषा होती ।।

पुत्रवधू

मन मोहन मोहनिया प्यारी
लज्जाभूषण वंश चलाती।
दोनों कुल को जोड़ रखे जो
पुत्रवधू न्यारी कहलाती ।।

घर की लक्ष्मी बन कर रहती
सेवाभाव हृदय में भरकर ।
परछाईं सी आगे पीछे
सबके दुख वो हर-हर हरकर।।

सुघड़ आचरण से जीते जी
सबको मन से वोअपनाती ।
मान सभी का दिल से करती
रिश्ते नाते सदा निभाती ।।

नेह गीत गुंजार गगन में
धर्म और कर्तव्य जतन से ।
धैर्य सरलता भाव प्रबलता
मधुरस घोले मृदुल वचन से ।।

निर्मल धारा

जग को सदा से कहती, आयी हूँ प्यारा मैं तो ।
उम्मीद के कलश की, निर्मल सी धारा मैं तो ।।

बेटी के रूप में तो, बाबुल से प्रीत पायी ।
नन्ही कली ये कैसे, कब हो गयी परायी।।
आकाश की ऊँचाई, चंदा सितारा मैं तो ।
उम्मीद के कलश की, निर्मल सी धारा मैं तो।।

सपनें सजीले देखे, रथ पर सवार होकर ।
देखो लगूँ मैं कैसी, खुद ही में खुद खोकर।।
प्रियतम का हाथ थामा, नदिया किनारा मैं तो।
उम्मीद के कलश की, निर्मल सी धारा मैं तो।।

गोदी में जब से आया, प्यारा सा लाल मेरा ।
अपलक उसे निहारूँ, ऐसा है हाल मेरा ।।
माँ - माँ की गूँज सुनकर,हर्षित स हारा मैं तो।
उम्मीद के कलश की,निर्मल सी धारा मैं तो।।

उम्मीद की किरण

मन में सेवा भाव भरा हो
तब जग सुंदर बनता है ।
भेद भाव की बातें न हो
तब जग सुंदर लगता है ।।

छोटी सी कोशिश भी तेरी
रंग अनेकों लायेगी ।
हर चेहरा मुस्कायेगा तब
उम्मीदें बढ़ जायेगी ।

प्रेरक- प्रेरक उदाहरण से
गीत कहानी रचना होगा ।
झूठे तर्क - कुतर्कों से अब
हम सबको ही बचना होगा ।।

जिम्मेदारी से आगे आ
अपना फर्ज़ निभाना होगा ।
सुख - दुख चाहें जो भी आए
गीत खुशी के गाना होगा ।।

बढ़ते कदम

जिंदगी क्यों रेत सी बहती चली जाती दिखे ।
पंख उड़ने को मिले फिर भी न मुस्काती दिखे ।।
बाँधकर अपनी उड़ाने सोच सीमित तुम न करना
मन में हिम्मत धार कर ही तुम सदा पीड़ा को हरना ।।

गीत ग़ज़लों से निकलकर छोड़ विज्ञापन की दुनिया ।
ये जगत कब से तुम्हारा शब्द थामें बढ़ना मुनिया ।।

हो सभी की तुम दुलारी, हो परी पापा की प्यारी ।
पुष्प बन महको जगत में तुम कली सुंदर हमारी ।।

महल ढहते रेत वाले तुम नहीं हो रेत के सम ।
तुमसे उम्मीदें हैं मेरी रोकना मत ये कदम ।।

देवी गीत

चलो सखि पूजने देवी
कि नवरातें हैं आईं अब ।

शरण में जो तेरी आता,
बिना माँगे ही सब पाता ।
बदल जाता है लेखा सब
दरश मैया का होता जब ।
भरो खुशियों से ये झोली
कि नवरातें हैं आयीं अब .....
सदा सिंदूर से चमके ।
सितारों भर जड़ी दमके ।।
हो खुशियों से भरी झोली
मेरी मैया मेरी हो ली ।
लाल बिंदी हो माथे पर
कि नवरातें हैं आयीं अब.....

मेरी गोदी भरी होवे
कभी आँखें न ये रोवें
लाल ही हो चुनर मेरी
सदा पूजा करूँ तेरी
हे जगदम्बे माँ ये वर दो,
कि नवरातें हैं आयीं अब .....

सूर्य का तेज

उदित सूर्य संग भोर हुई है
नाच उठा मन मोर ।
पंछी का कलरव गुंजित हो
घर के चारों ओर ।।

खिली सुनहरी धूप ऊर्जा
भर- भर देती तेज ।
अब तो जागो सोने वालों
छोड़ो आलस सेज ।।

दिव्य रश्मियाँ प्रखर ओज से
करतीं नव संचार ।
चलो सहेजें वन उपवन वा
रत्न खनिज जल धार ।।

सप्त किरण से शोभित होता
सुंदर जगत विहान ।
नमस्कार कर सूर्य देव को
बनिए बुद्धि सुजान ।।

सृजन स्वरूपा

धैर्य शक्ति पहचान है नारी
सृजन स्वरूपा मान है नारी ।

हिम्मत का कोई न सानी
सबने ही महिमा पहचानी ।
मीठी वाणी मधु तब घोले
मन मोहक मुस्का जब बोले ।।

कभी किसी से ये न हारी
सृजन स्वरूपा मान है नारी ।।

धार मोड़ दे संजीवन से
संतति में भर नवजीवन से
बनी नर्मदा दृढ़ निश्चय से
मूल्यवान समता समुच्य से ।।

नवदुर्गा सी लगती प्यारी
सृजन स्वरूपा मान है नारी ।।

कल- कल बहती सरिता बनती
सागर में जाकर है मिलती ।
बूंद बरसती नेह पनपता
हरियाली का रूप निखरता ।

बन उपवन की शोभा न्यारी
सृजन स्वरूपा मान है नारी ।।

संकल्प

अधिकार की परिकल्पना साकार है, साकार है ।
जन चेतना में सत्य ही स्वीकार है, स्वीकार है ।।

हिम्मत अगर निर्जीव में भी
प्राण भर देती सुनों ।
प्रिय भावनाएँ जाग्रत हों
स्वप्न स्वप्निल से बुनों ।।
कर रहा रक्षा सभी की
फर्ज को साधे हुए ।
बढ़ रहा कर्तव्य पथ पर
कर्म आराधे हुए।।
मिल गया जब से नया आकार है , आकार है ।

थकना पथिक, रुकना नहीं
संकल्प सच करते हुए ।
इतिहास गर रचना अगर
जीना नहीं डरते हुए ।।
विषपान कर शिव के सदृश
जग पीर को हरते हुए ।
अमृत कलश जीवन सरस
साहित्य में भरते हुए ।।
कमजोरियों का आज से प्रतिकार है, प्रतिकार है।

जनचेतना में सत्य ही स्वीकार है , स्वीकार है ।
अधिकार की परिकल्पना साकार है, साकार है ।।

विकास

हर दिवस उजाला है, होगा विकास ये आशा ।
विश्वास अनोखा है, जीवन की ये परिभाषा ।।

अनहोनी हो जाए, या शुभ घड़ियाँ आएँ ।
रुकना न कभी लोगों, सुख दुख आएँ - जाएँ ।।

जीना उसको आए, गम को जो पी पाए ।
मुश्किल में भी वो तो, बस बढ़ता ही जाए ।।

जिम्मेदारी सबकी, उसकी ही पूँजी है ।
आवाज यही लोगों, इस जग में गूँजी है ।।

सबका विकास होवे , ऐसे ही कर्म करेंगे ।
दुखियों की पीड़ा को, मिलजुल कर सतत हरेंगे ।।

प्रेरक गीत

गीत हम खुशियों के गाते रहेंगे ।
वन उपवन मुस्काते रहेंगे ।।

पार कभी नदिया के आना जो पड़े ।
बंधनो को छोड़- छाड़ जाना जो पड़े ।।
भूल और भुलैया में भटके नहीं।
राहों में घूम - घूम अटके नहीं।।

बात यही सबको सिखाते रहेंगे ।
गीत हम खुशियों के गाते रहेंगे ।।

रंग आसमानी सदा सुंदर लगे ।
चंदा अरु चाँदनी के भाग हैं जगे ।
नदिया की धार सम बहते चलो।
हौसलों को हिय में भरते चलो ।।

तारे जग मग जग करते रहेंगे ।
नेह प्रीत भाव मन भरते रहेंगे ।।

बाधाएँ काट के प्रपात बनते ।
गुरुवर सभी के संताप हरते ।।
जीवन के पथ पर आगे ही बढ़ो

❖ कवितायें

छाया सक्सेना 'प्रभु'
कवयित्री

सत अरु सुपथ की सीढ़ियाँ चढ़ो

धार स्नेह की बहाते रहेंगे ।
गीत हम खुशियों के गाते रहेंगे ।।

अंतर्मन

मन गंगाजल, यमुना धारा
संगम गीत सुनाएँ ।
अंतर्मन को दीप्त करें तो
हम प्रयाग बन जाएँ ।।

कोशिश करने वाले जीते
धर्म कर्म हो जाते ।
पार लगाते सबकी नैया
गीत खुशी के गाते ।।

अपनो का संग सतत मिलेगा
खोयी आस जगाएँ ।
अंतर्मन को दीप्त करें तो
हम प्रयाग बन जाएँ ।।

नदियों के सम बढ़ते जाते
सागर सहज पुकारे ।
कभी बनाते जल प्रपात सा
कभी सुगमता धारे ।।

वृंदावन बरसाने बनकर
कुंज गलिन महकाएँ ।
अंतर्मन को दीप्त करें तो
हम प्रयाग बन जाएँ ।।

पौधारोपण

एक- एक पौधे को, घर में लगाएँ ।
गीत ग़ज़ल कविता सब, मिलकर सुनाएँ ।।

आम नीम बरगद संग, पीपल की छाँव ।
महुआ और जामुन से, महकेगा गाँव ।।
टेसू के लाल फूल, चंपा सुहाय ।
गुलमोहर सेमल मन, सबका लुभाय ।।

भाव यही जन-जन के , मन में जगाएँ
गीत ग़ज़ल कविता सब, मिलकर सुनाएँ ।।

तुलसी गिलोय संग, हर्रा बहेर ।
मुनगा कदम्ब झर, बेरी के बेर ।।
सागौन शीशम, छातिम चहुँ ओर ।
हरियाली देख- देख, नाचे मन मोर ।।

रोग सारे तन -मन के, चलकर भगाएँ ।
गीत ग़ज़ल कविता सब, मिलकर सुनाएँ ।।

कर्मयोगी

कर्म ही धर्म है, धर्म ही कर्म है ।
जीतना -हारना , कर्म मत छोड़ना ।।

भावनाएँ बहुत, राह को रोकतीं
बात- बेबात पर , सर्वदा टोकतीं
सत्य वचनों से न, तुम मुकरना कभी
कोशिशें तो करो, राह बनती तभी

नेक कर्मों से तुम, मुख नहीं मोड़ना ।
जीतना -हारना , कर्म मत छोड़ना ।।

वक्त ठहरा नहीं , सब बदलता गया
सत सनातन सतत, धर्म चलता गया
धर्म ही धैर्य है, प्राणियों की विजय
प्रीत के रंग से , जिंदगी की है जय

सबके विश्वास को, तुम नहीं तोड़ना ।
जीतना -हारना , कर्म न छोड़ना ।।

मौसम

सावन की फुहारों का, रिमझिम सा बरसना ।
हर रंग में रंगते हुए , मौसम का बदलना ।।

बागों में पड़े झूले , झूले हैं सारी सखियाँ ।
बिन बात मुस्कुराकर, सजना व सवरना ।।

झूठे हैं सारे किस्से , जो लोग कह रहे ।
उम्मीद को ही थामें , बच- बच के निकलना ।।

जीने की कला सीखें ,अद्भुत प्रकृति से हमतो ।
पतझड़ के बाद फिर से , नव कोपलों का बनना ।।

नदियों की तरह बहना, संगम के साथ चलकर ।
कुछ सीखना सिखाना, खुशहाल सतत रहना ।।

जन्म की सार्थकता

मंजिलों की शर्त है बस, मुश्किलों को पार कर ।
जीत कर या हार कर, ये जिंदगी गुलजार कर ।।

कोशिशें करते रहो, आगे या पीछे हो भले ।
देश हित के काज में, इस जन्म को ही वार कर ।।

सत्य की राहें भले ही, हमको लगती हैं कठिन ।
तू चला चल, चल चला चल, जिद को मन में धार कर।।

नदी ,सागर या हो अंबर, या कोई उजली किरण ।
स्वर्ग तो है ये धरा, इससे ही बस तू प्यार कर ।।

जन्म मानव का मिला, ये व्यर्थ तुम करना नहीं ।
पीर सबकी दूर करते, जन्म को निस्सार कर ।।

गुरुवंदना

चरण वंदना आपकी , करता सकल जहान ।
तीन लोक भी कर रहे, नित्य सतत गुणगान ।।

बिन गुरुवर नहि मिल सके,कभी किसी को ज्ञान ।
प्रीत हृदय प्रिय धारते, शिष्य लगा कर ध्यान ।।

काज सहज बनने लगे, जब हो गुरु आशीष ।
इनके पूजन से मिलें, जगदीश्वर जगदीश ।।

सम्पूरण विश्वास से, सहज साधना साध्य।
ज्योतित जलती लौ रहे, गुरुवर को आराध्य ।।

साचे मन आराधिए, गुरुवर गुण की खान ।
पूरण सारे काज हों, बढ़े मान सम्मान ।।

जल संचय

जल जीवन है इसे सहेजें, ये आने वाला कल है ।
नदियों की बहती धारा भी, कहती बस कल, कल-कल है ।।

जल जलकर जलती है धरती, जल बिन जल सब सूख रहे ।
जलज नहीं रहता है खुश तब, वृक्ष सभी जब सूख रहे ।।

सूना- सूना पनघट दिखता, ताल तलइया गुमसुम से ।
वर्षा जल को अमृत जानो, जीवों जग जीवन तुम से ।।

सागर का दमखम भी जल है, नदियों का अस्तित्व यही ।
जल की रानी मीन न जल बिन, सोलह आने बात सही ।।

जीवन की सार्थकता

सत्य सार्थक सतत सफलता
साधन सत होता ।
कर्म किए जाता तब मानव
कभी नहीं रोता ।।

भूल चूक से मत घबराना
बाधाओं से लड़- लड़ जाना
कठिन भले लगती हो मंजिल
लक्ष्य प्राप्त कर तुम मुस्काना

बीज हृदय में सच्चाई के
जब - जब भी बोता ।
कर्म किए जाता तब मानव
कभी नहीं रोता ।।

अटल सत्य जीना अरु मरना
मानवता की पीड़ा हरना
लाख गिरें पर उठ- उठ जाना
विषम परिस्थिति धीरज धरना ।

पापों को अपने आँसू से
निश्छल हो धोता ।
कर्म किए जाता तब मानव
कभी नहीं रोता ।।

स्वभाव

बिखरे हुए भाव में दिखता
खुशहाली का सदा अभाव ।

कण -कण अपना
मूल्य खोजते
जीव बने रहते
निर्जीव ।
लोभ लालसा
कूटनीति संग
अहंकार हो रहा
सजीव ।

रग -रग में मक्कारी भरते
भाँति- भाँति के हैं दुर्भाव ।

आशा छोटी
छोटी होकर
बैठी दिखती जहाँ
उदास ।
वहाँ निराशा
रानी बनकर
करवाती जग में
उपहास ।।

भूल भुलैया में खोकर के
बदल रहे हैं मूल स्वभाव ।

करें बड़ाई
झूठ मूठ की
बोल बोल कर
ऊँचे बोल ।
कथनी करनी
एक नहीं है
चीख चीख कर
कहता ढोल ।

विज्ञापन के छल- प्रपंच से
बना रहे हैं दिव्य प्रभाव ।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य, -91 98378 94997
जबलपुर ब्यूरो -अनीता दुबे -91 78696 43222
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,-91 94151 69522
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,-91 70935 29183
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,-91 99934 42579
गोरखपुर ब्यूरो - सरिता सिंह - 96282 04228
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज, -91 96439 68797
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी, - 91 94355 15469
प्रयागराज ब्यूरो - गीता सिंह 94152 13851
चंडीगढ़ सिटी - प्रभजोत कौर -91 76969 19159
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,-91 97549 69496
शिलांग ब्यूरो - नीता शर्मा -91 98630 29640
बिलासपुर ब्यूरो -संगीता बनाफर-91 70003 39148
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,-91 78694 58122
कानपुर ब्यूरो - श्रद्धा श्रीवास्तव ,73765 45711
भोपाल ब्यूरो - साधना शुक्ला -91 94256 52547
जगदलपुर इकाई - स्मृति मिश्रा 'रीति'-91 93004 31143
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी, -91 6386 869 055
विश्वनाथ इकाई - सैयदा आनोवारा खातुन- 91 96787 72219
बिजनौर ब्यूरो - त्र-तुबाला रस्तोगी,-91 98971 11416
धमतरी ब्यूरो - श्रद्धा कश्यप -91 6265 018 551
बैंगलुरु ब्यूरो - अंजू भारती -91 84709 77659
गोडा ब्यूरो - सरिता कपूर -91 73768 96768
सुल्तानपुर ब्यूरो - माधवी शुचि -91 83170 45106
नोएडा ब्यूरो - प्रवीणा त्रिवेदी -91 85060 60468
पटना ब्यूरो - आ. मीना परिहार -91 70708 00416
लखनऊ ब्यूरो - अपर्णा गुप्ता --91 97933 18465
मंडला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन -91 93007 55500
भीलवाड़ा इकाई - डॉ राजमति पोखराना 81046 39622

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
संजय सक्सेना
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

❖ लघुकथायें

छाया सक्सेना 'प्रभु'
कवयित्री

एक और एकष्ठ ग्यारह

'देखना, ज़्यादा दिन नहीं चलेंगी तुम दोनों,' पड़ोस की विमला चाची मुस्कुराकर बोलीं, 'औरतों की दोस्ती कब तक टिकती है?'

स्मिता और राधा ने एक-दूसरे को देखा और हल्का-सा मुस्कुरा दीं।

दोनों बचपन की सहेलियाँ थीं। वर्षों बाद जीवन ने उन्हें फिर साथ ला खड़ा किया था। घर-परिवार और जिम्मेदारियों ने बहुत कुछ सिखाया था, पर भीतर की ऊर्जा अब भी जीवित थी।

एक दिन स्मिता ने कहा–

'क्यों न हम मिलकर कुछ नया करें?'

राधा ने हँसते हुए जवाब दिया–

'क्यों नहीं, एक और एक मिलकर ग्यारह बनें!'

बस, वहीं से शुरुआत हुई। दोनों ने मिलकर एक यूट्यूब चैनल शुरू किया–घरेलू हुनर, सरल जीवन-प्रबंधन और सकारात्मक सोच पर।

शुरुआत में मोबाइल स्टैंड भी नहीं था; किताबों के ढेर पर मोबाइल टिकाकर वीडियो बनाए जाते थे।

पहले वीडियो पर मुश्किल से पचास व्यू आए।

कुछ कमेंट भी आए–'देखते हैं कब तक साथ रहती हो।'

पर दोनों ने न ईर्ष्या को जगह दी, न अहं को। काम बाँट लिया–एक बोलती, दूसरी तकनीकी पक्ष संभालती। धीरे-धीरे दर्शक बढ़ने लगे।

एक दिन लाइव में किसी ने पूछा–

'तुम दोनों में झगड़ा नहीं होता?'

राधा हँसी–'झगड़ा नमक जैसा है, थोड़ा हो तो स्वाद देता है।'

स्मिता ने जोड़ा–'पर हम नमक को भोजन नहीं बनने देते।'

आज उनका चैनल हजारों लोगों तक पहुँच चुका है।

सचमुच, कदम से कदम मिलाकर चलती दो सहेलियाँ

एक और एक होकर ग्यारह बन गई थीं।

स्पेस का सच

'अरे भई, किस स्पेस की बात कर रहे हैं? आजकल तो हर तरफ स्पेस ही स्पेस है!'

दयाशंकर जी ने मुस्कुराते हुए कहा।

'सो तो है,' राघव जी ने हल्का ठहाका लगाया।

दोनों बचपन के मित्र थे। ज्वलंत मुद्दों पर व्यंग्य करते हुए चर्चा करना उनकी पुरानी आदत थी।

राघव जी बोले–

'कुछ साल पहले लोग चाँद और मंगल पर बसने के सपने देख रहे थे। अंतरिक्ष में कॉलोनी बसाने की योजनाएँ बन रही थीं। पर देखो, एक झटके में धरती पर ही सबको पर्सनल स्पेस मिल गया।'

दयाशंकर जी ने मास्क ठीक करते हुए कहा–

'अब तो हर जगह यही नियम है–मास्क लगाइए, दो गज दूरी रखिए, स्पेस बनाए रखिए।'

राघव जी मुस्कुराए–

'युवा पीढ़ी तो बरसों से 'मेरा स्पेस' की बात कर रही थी। लगता है ऊपर वाले ने उनकी सुन ली।'

कुछ क्षण दोनों चुप रहे।

फिर दयाशंकर जी धीरे से बोले–

'अजीब बात हैष्ठ

कल तक लोग पास आने के बहाने ढूँढ़ते थे,

आज पास आने से डरते हैं।'

राघव जी ने सड़क पर चलते लोगों को देखा–सब अपने-अपने घेरे में।

उन्होंने धीमे से कहा–

'लगता है इंसान ने दूरी बनानी सीख तो लीष्ठ

पर शायद नज़दीक रहना भूल गया है।'

दोनों एक क्षण ठहरे, फिर अपनी-अपनी राह चल पड़े–

स्पेस बनाए रखते हुए।

सहारे की राजनीति

पढ़ाई पूरी करने के बाद सोमेश नौकरी की तलाश में दर-दर भटकता रहा। हर जगह निराशा ही हाथ लगी।

तभी राज्य में सत्ता परिवर्तन हुआ और बेरोज़गारी भत्ता मिलने लगा। उसने राहत की साँस ली–

'डूबते को तिनके का सहारा ही सही।'

इसी बीच उसकी शादी ऐसी लड़की से हो गई, जो स्वयं भी बेरोज़गारी भत्ता पा रही थी।

दोनों ने सोचा–अब कुछ बड़ा करना चाहिए।

बैंक से दस लाख का ऋण लेकर उन्होंने कोचिंग सेंटर खोलने की योजना बनाई।

कुछ पैसे कुर्सी-टेबल और सजावट में लगे, और बाकी से कार खरीद ली।

कार में बैठकर वे रोज़ नए सपने बुनते, योजनाएँ बनाते और शहर में घूमते।

पर सपने कागज़ से आगे बढ़ न सके।

न अनुशासन था, न दिशा। धीरे-धीरे कोचिंग सेंटर सूना पड़ गया और अंततः बंद हो गया।

अब सवाल था–बैंक की किश्त कैसे भरी जाए?

तभी चुनाव की आहट सुनाई दी।

दोनों जोश से प्रचार में जुट गए।

सोमेश ने मुस्कुराकर पत्नी से कहा–

'बस इस बार सरकार बदल जाएष्ठ सब ठीक हो जाएगा।'

पत्नी ने भी आशा से सिर हिला दिया।

उन्हें अब भी भरोसा था–

अपनी गलती सुधारने से नहीं,

सरकार बदलने से उनकी किस्मत बदलेगी।

नेहा से नेहा जी तक

बरसों बाद फोन की घंटी बजी।

'रीमा जी, मैं संतोष बोल रहा हूँ। आज मेरी पुस्तकों का विमोचन है। आप अवश्य आइएगा। नेहा जी भी आई हैं। उन्होंने विशेष रूप से आपको बुलाया है।'

रीमा के चेहरे पर मुस्कान आ गई–

'नेहा से मिलने मैं ज़रूर आऊँगी।'

फोन रखते ही मन कॉलेज के दिनों में लौट गया–साझा हँसी, साझा सपने। उसने जल्दी-जल्दी काम निपटाया, लाल बॉर्डर की साड़ी पहनी, बड़ी बिंदी लगाई–मानो किसी कार्यक्रम में नहीं, अपनी सहेली से मिलने जा रही हो।

कार्यक्रम स्थल पर पहुँचते ही उसने नेहा को फोन किया।

'दीदी, बस थोड़ी देर में आती हूँष्ठ'

एक घंटाष्ठ फिर दूसराष्ठ

मंच से बार-बार आवाज़ गूँज रही थी–

'नेहा जीष्ठ नेहा जीष्ठ'

उनकी उपलब्धियों और विद्वता का गुणगान हो रहा था।

तभी हलचल हुई–

'नेहा जी आ गईं!'

फूल-मालाओं और कैमरों की चमक के बीच नेहा आगे बढ़ीं। रीमा के पास आकर झुकीं–

'दीदी, देर हो गई।'

रीमा मुस्कुरा दी, पर उस मुस्कान में प्रतीक्षा की थकान थी।

कुछ देर बाद रीमा को लगा–

जिस नेहा से मिलने वह आई थी, वह कहीं पीछे छूट चुकी है।

सामने जो खड़ी है, वह अब केवल 'नेहा' नहीं–'नेहा जी' है।

उसे समझ आ गया–

समय केवल चेहरों को नहीं बदलता,

संबोधन भी बदल देता हैष्ठ

और कभी-कभी रिश्ते भी।

काश, यह झूठ होता

मोबाइल की गैलरी में जमा अनगिनत तस्वीरें हटाते-हटाते उसकी उँगलियाँ थक चुकी थीं।

व्हाट्सऐप के दर्जनों ग्रुप–जहाँ हर पल कोई न कोई संदेश, फोटो, शोरष्ठ मन को थका देता था।

वह एक-एक करके सब साफ कर रही थी कि अचानक उसकी उँगलियाँ ठिठक गईं।

एक तस्वीरष्ठ

और उसके साथ लिखा था–

'विनीत नहीं रहेष्ठ'

उसका दिल जैसे एक पल को रुक गया।

हाथ काँप उठे।

उसने माथे पर हाथ रख लिया–

'हे भगवानष्ठ उसके परिवार को यह दुःख सहने की शक्ति देना।'

मन अनायास ही वर्षों पीछे लौट गया।

कभी वह भी विनीत की ज़िंदगी बनना चाहती थी।

पर पिता अड़े रहे–

'इस लड़के से रिश्ता नहीं करूँगा। झूठ बोलने वालों पर भरोसा नहीं होता।'

वह चुप रह गई थी।

विनीत सचमुच झूठ बोलता था–छोटे-बड़े, बेवजहष्ठ आदतन।

बाद में सुना था–विवाह के बाद वह बदल गया था। जिम्मेदारियों ने उसे संभाल लिया था। वह अपने परिवार के साथ खुश था।

पर आजष्ठ

मोबाइल की स्क्रीन अब भी उसी तस्वीर पर ठहरी थी।

आँखों में नमी उतर आई।

मन ने जैसे आखिरी उम्मीद से फुसफुसाया–

काशष्ठ यह खबर भी

उसके किसी पुराने झूठ जैसी होती।

कुछ देर बाद उसने फोन उठायाष्ठ

और उस नंबर को ढूँढ़ने लगी

जिस पर वर्षों से उसने कभी कॉल नहीं किया था।

जीवन परिचय

छाया सक्सेना ' प्रभु '

आत्मजः माता- श्रीमती शारदा सक्सेना

पिता- डॉ. विश्वनाथ प्रसाद सक्सेना

जीवन साथीः श्री मनीष सक्सेना

शिक्षाः बी. एस. सी. , बी. एड., एम. ए. राजनीति विज्ञान, एम. फिल. (नीति शोध)

व्यवसायः पूर्व उच्चश्रेणी शिक्षिका, संप्रति- स्वतंत्र लेखन ।

निवास स्थानः जबलपुर (म.प्र.)

वर्तमान पदः अधीक्षिका नारी मंच, संगम सुवास, कोषाध्यक्ष- साहित्य संगम संस्थान

(एस-1801-2017) नई दिल्ली

प्रधान संपादकः अविचल प्रभा मासिक ई पत्रिका, साहित्य संगम संस्थान ।

मुख्यालय सचिवः अभियान, विश्ववाणी संस्थान , जबलपुर (म.प्र.)

प्रकाशित कृतियाँः व्यक्तिगत ई काव्य संग्रह- धवल काव्य अनुभूति, ई लघुकथा संग्रह- ड्योढ़ी के पार ,तुम कली सुंदर हमारी ।

संपादनः साझा संकलन लघुकथा संगम, 25 रचनाकार विशेष पुस्तक साहित्यमेध, साझा उपन्यास, कई साझा काव्य संकलन का ।

उपलब्धिः अभ्युदय सम्मान, संगम रत्न सम्मान, काव्य श्री, जिज्ञासा रत्न सम्मान, काव्य कलश, दोहा सिद्ध, काव्यधारा रत्न, भाव भूषण।

chhayasaxena2508@gmail.com